NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

पर्यटन मानवविज्ञान

(Tourism Anthropology)

BANS-183

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

पर्यटन मानवविज्ञान

(Tourism Anthropology)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खंड-1 : पर्यटन की समझ (Understanding Tourism)

1. पर्यटन का परिचय 1
(Introduction to Tourism)
2. पर्यटक और पर्यटन 15
(Tourist and Tourism)
3. मानवविज्ञान की दृष्टि से पर्यटन 30
(Tourism through Anathropological Lens)
4. पर्यटन और संस्कृति 45
(Tourism and Culture)
5. संस्कृति का बाजारीकरण 60
(Commodification of Culture)

खंड-2 : मानव विज्ञान और पर्यटन में उभरती प्रवृत्तियाँ
(Emerging Trends in Anthropology and Tourism)

6. पर्यटन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था 72
(Political Economy of Tourism)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

7. पर्यटन बनाम धरोहर स्थल 84
(Tourism Versus Heritage Sites)

8. मूर्त और अमूर्त धरोहर 97
(Tangible and Intangible Heritage)

9. पर्यावरणीय पर्यटन 110
(Ecotourism)

10. पर्यटन मानवविज्ञान में नई दिशाएँ 131
(New Directions in the Anthropology of Tourism)

■ ■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

पर्यटन मानवविज्ञान

BANS-183

(Tourism Anthropology)

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *(i)* दो खण्ड हैं, 'क' और 'ख'। *(ii)* कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। *(iii)* प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। *(iv)* सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड क

प्रश्न 1. मानवशास्त्रीय दृष्टि से पर्यटन के अध्ययन पर चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-3, पृष्ठ-30, 'मानवविज्ञान के संदर्भ में पर्यटन की व्याख्या'

प्रश्न 2. धार्मिक पर्यटन को परिभाषित कीजिए। उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-2, पृष्ठ-16, 'तीर्थयात्रा या धार्मिक पर्यटन', पृष्ठ-22, प्रश्न 5

प्रश्न 3. उपयुक्त उदाहरणों के साथ पर्यटक स्थल के वाणिज्यीकरण पर विचार-विमर्श कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-5, पृष्ठ-68, प्रश्न 5

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए

(क) पर्यटन में प्रामाणिकता।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-46, 'पर्यटक अनुभव और प्रामाणिकता पर बहस'

(ख) सांस्कृतिक बहाव (ड्रिफ्ट)।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-50, प्रश्न 3

(ग) क्षेत्र स्थल (फील्डसाइट)।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-3, पृष्ठ-32, 'कार्यक्षेत्र/पर्यटक स्थल'

खण्ड-ख

प्रश्न 5. पर्यटन में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में भोजन और त्यौहारों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-8, पृष्ठ-98, 'उत्सव', पृष्ठ-99, 'खाद्य पहचान'

प्रश्न 6. स्थानीय पर्यावरण और पर्यटकों से सम्बन्धित कुछ मुद्दों पर विचार-विमर्श कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-10, पृष्ठ-134, प्रश्न 1

प्रश्न 7. पारिस्थितिक पर्यटन को परिभाषित कीजिए। केरल में सतत् पारिस्थितिक पर्यटन पर चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-9, पृष्ठ-110, 'पर्यावरणीय पर्यटन की परिभाषा', पृष्ठ-113, 'केरल : पारिस्थितिक सतत पर्यटन'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए

(क) पर्यटन और वैश्वीकरण।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-10, पृष्ठ-135, प्रश्न 2

(ख) संग्रहालय।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-8, पृष्ठ-100, 'सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संग्रहालय'

(ग) धरोहर वाले स्थान।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-7, पृष्ठ-84, 'यूनेस्को और विश्व धरोहर स्थल', पृष्ठ-85, 'विश्व धरोहर स्थल : एक संक्षिप्त इतिहास, भारत और विश्व धरोहर स्थल'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

पर्यटन मानवविज्ञान

BANS-183

(Tourism Anthropology)

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *(i)* दो खण्ड हैं, 'क' और 'ख'। *(ii)* कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। *(iii)* प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। *(iv)* सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड क

प्रश्न 1. मानव विज्ञान को परिभाषित कीजिए। मानव विज्ञान में पर्यटन अध्ययन के इतिहास का वर्णन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 1 तथा पृष्ठ-2, 'पर्यटन मानवविज्ञान का इतिहास'

प्रश्न 2. पर्यटन और प्रवासन, कल्पित और स्मरणीय यात्रा पर एक नोट लिखिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-2, पृष्ठ-19, 'पर्यटन और प्रवासन', पृष्ठ-23, प्रश्न 6, पृष्ठ-24, प्रश्न 7

प्रश्न 3. संस्कृति-संक्रमण को परिभाषित कीजिए। उपयुक्त उदाहरण के साथ पर्यटन में परिघटनाओं पर चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-49, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए

(क) मूल निवासी/मेजबान।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-3, पृष्ठ-32, 'मूल निवासी/मेजबान'

(ख) धार्मिक स्थलों का वस्तुकरण।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-5, पृष्ठ-63, 'धार्मिक स्थलों का बाजारीकरण'

(ग) छवि और छवि निर्माण।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-47, 'छवि और छवि निर्माण'

खण्ड-ख

प्रश्न 5. विभिन्न प्रकार के पर्यटन पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-2, पृष्ठ-21, प्रश्न 4

प्रश्न 6. भीमबेटका में किए गए पुनरुद्धार और संरक्षण परियोजना पर चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-7, पृष्ठ-86, 'केस स्टडी-2'

प्रश्न 7. पारिस्थितिक पर्यटन क्या है? भारत से उपयुक्त उदाहरण देकर व्याख्या कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-9, पृष्ठ-110, 'पर्यावरणीय पर्यटन की परिभाषा', पृष्ठ-112, 'भारत में पर्यावरणीय पर्यटन केस स्टडी'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए

(क) सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संग्रहालय।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-8, पृष्ठ-100, 'सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संग्रहालय'

(ख) प्रौद्योगिकी और पर्यटन।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-10, पृष्ठ-132, 'प्रौद्योगिकी और पर्यटन'

(ग) वैकल्पिक पर्यटन।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-10, पृष्ठ-134, 'पर्यटन मानवविज्ञान की नई दिशाएं'

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

पर्यटन मानवविज्ञान
(Tourism Anthropology)

खंड-1 : पर्यटन की समझ
(Understanding Tourism)

पर्यटन का परिचय
(Introduction to Tourism)

1

परिचय

दैनिक जीवन में हम प्राय: पर्यटन शब्द सुनते हैं। किसी भी समाचार-पत्र में किसी-न-किसी रूप में पर्यटन का वर्णन मिल जाता है, जैसे–कहीं सरकारी नीति के रूप में, कहीं पर्यटकों के आगमन, उत्पाद, पर्यटन स्थल, अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव, स्थानीय लोगों का विरोध अथवा आवभगत के रूप में।

वर्तमान पर्यटन 50 वर्ष के पूर्व के पर्यटन जैसा नहीं है। आने वाले वर्षों में भी इसमें काफी परिवर्तन होगा। इस परिवर्तन की प्रक्रिया में प्रेरणा की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।

वस्तुत: पर्यटन की प्रेरणा या उद्देय पर्यटन उद्योग के विविध घटकों पर गहन प्रभाव डालते हैं। प्रेरणा से पर्यटकों का व्यवहार निर्धारित होने के साथ-साथ पर्यटन की भविष्यगत आवश्यकताओं के निर्धारण के लिए उनका आलोचनात्मक विश्लेषण भी किया जाता है। अतएव पर्यटक व्यावसायिकों अथवा पर्यटन अध्ययन के विद्यार्थियों के लिए यह ज्ञात करना आवश्यक है कि लोग भ्रमण/यात्रा क्यों करते हैं तथा पर्यटक किसी खास स्थल को ही क्यों चुनते हैं अथवा कोई खास स्थल ही पर्यटकों को आकर्षित क्यों करता है?

पर्यटन मानवविज्ञान किसी स्थान के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक जीवन के साथ पर्यटन से संबंधित सभी गतिविधियों का अध्ययन करने के साथ पर्यटन द्वारा मेजबान और पर्यटक दोनों की संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभाव का भी अध्ययन करता है। इसे सामान्यत: पर्यटन उद्योग और पर्यटन मानवविज्ञान में अतिथि के रूप में जाना जाता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

मानवविज्ञान और पर्यटन : अवधारणाएँ और परिभाषाएँ

मानवविज्ञान को परिभाषित करना

मानवविज्ञान क्या है?

मानवविज्ञान मनुष्य के जीवन का अध्ययन समय और स्थान के सन्दर्भ में करता है। इसमें समय से अभिप्राय भूवैज्ञानिक समय से है, जो मानव की उत्पत्ति, विकास और भिन्नता का अध्ययन करता है। इसमें स्थान का संबंध पृथ्वी पर रहने वाली सम्पूर्ण मानव जनसंख्या के पारिस्थितिक और पर्यावरणीय संबंधों से हैं। यह मनुष्यों का अध्ययन समग्रता में करता है।

मानवविज्ञान शब्द दो ग्रीक शब्दों 'एंथ्रोपोस' और 'लोगोस' से मिलकर बना है, जिसमें 'एंथ्रोपोस' का अर्थ 'मानव' और 'लोगोस' का अर्थ 'अध्ययन' है। यह वैज्ञानिक और मानवतावादी दोनों दृष्टिकोणों से देखता है और समग्र दृष्टिकोण को ध्यान में रखता है। एक मानवविज्ञानी का मुख्य उद्देश्य हम कौन है? हम कैसे बने? हम क्यों हैं? जैसे मौलिक प्रश्नों को समझने का प्रयास करता है। ये प्रश्न मानवविज्ञान में मानव के अध्ययन के लिए आधार बनाते हैं।

भौतिक/जैविक मानवविज्ञानी मानव प्रजातियों की उत्पत्ति विकास, भिन्नता और वृद्धि को त्वचा, आंख, बालों का रंग आदि में भिन्नता के सन्दर्भ में समझने में रुचि रखते हैं। यह मानव भिन्नता के अस्तित्व के बारे में जानने और इस तरह के बदलावों के पीछे वैज्ञानिक स्पष्टीकरण को खोजने का प्रयास करता है।

सांस्कृतिक मानवविज्ञान समाज और संस्कृति का अध्ययन करना है। इसने दुनिया भर में विभिन्न समाजों और संस्कृतियों को समझने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। सामाजिक और सांस्कृतिक

www.neerajbooks.com

मानवविज्ञान मानव समाज का निर्माण करने वाले सामाजिक संस्थानों और सांस्कृतिक विशेषताओं को समझना चाहता है।

पुरातात्विक मानवविज्ञान का विषय क्षेत्र अतीत की विभिन्न सांस्कृतिक अवधियां हैं। इसका उद्देश्य प्रागैतिहासिक मानव द्वारा विभिन्न उपकरण प्रकारों के अध्ययन के माध्यम से मानव अतीत को फिर से जोड़ना है, जिनके कोई लिखित रिकॉर्ड (साक्ष्य) नहीं हैं। प्रागैतिहासिक मानव के पूर्व जीवन का अध्ययन अतीत के अध्ययन की निरपेक्ष और सापेक्ष तिथि निर्धारण विधियों द्वारा किया जाता है।

भाषाई मानवविज्ञान में विभिन्न भाषाई समूहों से संबंधित लोगों के बीच संचार के माध्यम के रूप में भाषाओं का अध्ययन करना सम्मिलित है। इसमें मौखिक भाषा और सांकेतिक भाषा दोनों आते हैं।

हम मानवविज्ञान का अध्ययन कैसे करते हैं?

मानवविज्ञान के उद्भव को पूर्व की खोज और उपनिवेशीकरण की यूरोपीय यात्रा में निहित माना जा सकता है। प्रारंभिक वर्षों के दौरान मानवविज्ञानी डेटा संग्रह के लिए क्षेत्र अध्ययन नहीं करते थे।

1890 में सर जेम्स फ्रेजर द्वारा 'गोल्डन बाउ' में यात्रियों, प्रशासकों, मिशनरियों आदि के कथन पर आधारित दूर-दूर की यात्राओं और संस्कृतियों को कहानियों के तौर पर प्रस्तुत किया।

धीरे-धीरे मानवविज्ञान एक क्षेत्र विज्ञान के रूप में स्थापित हो गया और क्षेत्रीय कार्य मानवशास्त्रीय अध्ययन की पहचान बन गया। मलिनोवास्की ने ब्रिएंड आइलैंडर्स के बीच फील्डवर्क के महत्त्व को समझने हेतु तीन बुनियादी प्रश्न आदर्श, प्रामाणिक और वास्तविक व्यवहार को लेकर पूछे। एकत्र आंकड़े मानवविज्ञानी किए अध्ययन के क्षेत्र में रहने वाले लोगों के जीवन पर आधारित हैं। इसके पीछे अध्ययन क्षेत्र के आंतरिक दृष्टिकोण (एमिक) को एकत्र करने की अपेक्षा लोगों का उद्देश्यपूर्ण अध्ययन करने की अवधारणा है। व्यक्तिपरक मानवशास्त्रीय अध्ययन में मानवविज्ञानी का उद्देश्य समाज और उसकी संस्कृतियों की सापेक्षता को समझना होता है।

मानवविज्ञान एक विषय के रूप में वर्तमान में व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए अपने उस ज्ञान को लागू करने का प्रयास करता है, जो उसने मानव जीवन के जैविक, सामाजिक/सांस्कृतिक और पुरातात्विक पहलुओं की समझ के माध्यम से एकत्र किया।

पर्यटन की परिभाषा

पर्यटन का इतिहास मानव जाति की संस्कृतियों में व्याप्त है। यह समकालीन लोगों के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक तथ्य है और एक प्रमुख उद्योग भी है। पर्यटन विकासशील देशों के लिए एक विकास का साधन है। स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'होस्ट्स गेस्ट्स : द एंथ्रोपोलॉजी ऑफ टूरिज्म' (1989) की प्रस्तावना में पर्यटक को एक अस्थायी रूप से कार्यनिवृत्त व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया है।

स्मिथ के अनुसार किसी व्यक्ति के पास समय और भोजन, कपड़े, आवास, स्वास्थ्य देखभाल, परिवहन आदि मूलभूत आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त आय नहीं है और पर्यटन सकारात्मक सांस्कृतिक स्वीकृति के रूप में व्यक्ति को उसके नियमित/नीरस जीवन से एक विराम लेने की स्वीकृति देता है। एक गतिविधि के रूप में पर्यटन एक व्यक्ति को छोटी अवधि के विश्राम के साथ उसके कार्य-जीवन को वैकल्पिक करने का अवसर देता है। जे. जाफरी पर्यटन को मनुष्य के अपने सामान्य निवास स्थान से दूर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले उद्योग और सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और भौतिक वातावरण पर पर्यटक और पर्यटन उद्योगों के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया है। मैथिरान और वॉल के अनुसार पर्यटन एक बहुआयामी घटना है, जिसमें आवाजाही सम्मिलित है। ग्रीनवुड ने पर्यटन को माल, सेवाओं और लोगों की गतिशीलता के रूप में परिभाषित किया। वैन हैरलर ने अपनी पुस्तक 'टूरिज्म : एन एक्सप्लोरेशन' में कहा कि पर्यटन के चार प्राथमिक तत्व हैं—यात्रा की मांग, पर्यटन मध्यस्थ, गंतव्य प्रभाव और प्रभावों की सीमा।

1990 के दौर के बाद पर्यटन के विवरण को एक उत्तर आधुनिक और मानवतावादी परिप्रेक्ष्य में रेखांकित किया। रेयान के अनुसार पर्यटन स्थान का अनुभव है। मानवतावादी और अनुभवात्मक प्रतिमान 'मेजबान' और 'अतिथि आबादी' दोनों के अनुभवों को सम्मिलित करने की अनुमति देता है। मिडलटन ने पर्यटन को व्यवसाय और पर्यटक को ग्राहक मानकर एक अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। पर्यटन का अध्ययन राजनीतिक, प्राकृतिक, आर्थिक अथवा सामाजिक वातावरण को तत्व मानकर किया जा सकता है।

उरी ने पर्यटन और उत्तर आधुनिकतावाद पर चर्चा करते हुए पर्यटन को अवकाश गतिविधि कहा, जो विनियमित और संगठित कार्य के विपरीत है। कोई भी स्थान/गंतव्य का उसे देखने और आनंद के पूर्वानुमान के साथ चयन किया जाता है। उरी ने वैश्वीकरण से सामाजिक जीवन के अनगिनत पहलुओं को बदलने को इंगित किया।

पर्यटन उद्योग के बदलते और बढ़ते स्वरूप से पर्यटकों की कारकों और अपेक्षाओं की बृहत जटिलता और पर्यटकों की यात्राओं की सांस्कृतिक प्रतिक्रियाओं और विविधता के कारण पर्यटन की एक व्यापक परिभाषा प्रदान करना कठिन है। सामाजिक वैज्ञानिकों और विशेष रूप से मानवविदों ने पर्यटन के विभिन्न पहलुओं को इसमें सम्मिलित किया है।

पर्यटन मानवविज्ञान का इतिहास

1960 और 1970 के दशक में पर्यटन मानवविज्ञान अध्ययन के एक अलग क्षेत्र के रूप में आरंभ हुआ, यह अकादमिक और व्यावहारिक मानवशास्त्र दोनों में अपेक्षाकृत एक नई शाखा है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

1970 और 1980 के दशक के प्रारंभ से पर्यटन का मानवशास्त्रीय अध्ययन प्रभावशाली रहा है। वेलेन स्मिथ, मैल्कम क्रिक, डेनिसन नैश, नेल्सन ग्रेबर्न और एरिक कोहेन एवं अन्य ने इसमें योगदान दिया। वैलेंस स्मिथ की पुस्तक 'होस्ट एंड गेस्ट : द एंथ्रोपोलॉजी ऑफ टूरिज्म' प्रकाशित होने से पहले पर्यटन मानवविज्ञान के क्षेत्र से बाहर था। एक दशक बाद इस पुस्तक के दूसरे संस्करण के बाद पर्यटन मानवविज्ञान अध्ययन का क्षेत्र माना गया।

पर्यटन मानवविज्ञान पर्याप्त मानवशास्त्रीय वैधता प्राप्त करने और 'द एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च' जैसी पत्रिकाओं के प्रकाशन के बाद कई पक्षों और विषयों को सम्मिलित करता है। फिलिप पियर्स ने पर्यटन के सामाजिक मनोविज्ञान में योगदान दिया, तो ग्रेबर्न ने पर्यटन को पलायनवाद अथवा आनंद चाहने वाले तंत्र के रूप में देखा। नैश ने पर्यटकों और मेजबान आबादी के बीच के संबंधों के परिणामी पहलुओं पर चर्चा की। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक विद्वानों के इन अध्ययनों ने पर्यटन के मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण में अत्यधिक योगदान दिया।

पर्यटन अध्ययन के लिए मानवविज्ञान की प्रासंगिकता को विभिन्न अध्ययनों के सन्दर्भ में निम्नलिखित रूपों में समझ सकते हैं–

(क) लोगों को व्यवसाय की अपेक्षा पर्यटन के विश्लेषण में रुचि हो।

(ख) मानवविज्ञान वैश्वीकृत संसार के क्षेत्रों को पहचानकर विषय के रूप में पर्यटन का महत्त्वपूर्ण विश्लेषण प्रदान करता है।

(ग) मानवविज्ञान अपनी गहराई और गुणात्मक दृष्टिकोण से मानव गतिशीलता और पर्यटन का अध्ययन में सक्षम है।

(घ) क्षेत्र आधारित और नृवंशविज्ञान दृष्टिकोण से एक विषय के रूप में मानवविज्ञान पर्यटन के प्रभावों पर प्राथमिक जानकारी प्राप्त करने के साथ सामान्य रुझानों पर अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए विविधता का अध्ययन करने में सहायता करता है।

(च) मानवविज्ञान पर्यटन गतिविधि में विविध सांस्कृतिक समागम और सामाजिक विनिमय का अध्ययन करने की अनुमति देता है।

पर्यटन पर मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

1970 के दशक में पर्यटन में मानवशास्त्रीय रुचि आरम्भ हुई। वर्तमान में यह बुनियादी और अनुप्रयुक्त अनुसंधान दोनों में भविष्य के विकास के आशाजनक संकेतों के साथ जांच का एक सुस्थापित क्षेत्र है। मानवविज्ञान में पर्यटन के अध्ययन का प्रारम्भ 'संस्कृति संपर्क' और 'संस्कृति परिवर्तन' के साथ मानवशास्त्रीय सोच से हुआ।

मानवविज्ञानी पर्यटक को संस्कृतियों के बीच संपर्क और परिवर्तन के कारक के रूप में देखते हैं। मानवविज्ञानियों ने अपने अध्ययन में पर्यटन को 'सावकाश गतिविधि के रूप में और पर्यटक को', 'सावकाश यात्रियों' के रूप में परिभाषित किया। सामाजिक संदर्भ में अंतर्निहित होने के कारण लेन-देन की प्रक्रिया से पर्यटक, उनके मेजबान और उनकी स्थानीय संस्कृति प्रभावित होती हैं। मानवविज्ञानियों ने आरम्भ में पर्यटकों और मेजबानों के बीच लेन-देन के साथ अपने विचारों को सीमित किया। कोहेन ने थाई उच्चभूमि (अपलैंड) गांव पर पर्यटन के प्रभाव के बारे में अपनी रिपोर्ट के आरंभ में क्षेत्र पर पर्यटन का प्रभाव मेजबानों के लिए अनुचित बताया, किन्तु अपने अध्ययन के निष्कर्ष के बाद उन्होंने माना कि निकट भविष्य में पर्यटन से मेजबान समाज पर विनाशकारी प्रभाव नहीं होगा।

वैचारिक रूप से मानवविज्ञानी अध्ययनों को पर्यटन की उत्पत्ति को समझने पर केंद्रित और पर्यटन के प्रभावों का विश्लेषण करने जैसे दो हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है। पर्यटन की उत्पत्ति के बारे में किए गए अध्ययन मुख्यत: पर्यटक के रूप में 'क्यों यात्रा करते हैं?' जैसे प्रश्नों पर केंद्रित होते हैं। पर्यटन के प्रभावों की पड़ताल करने पर इस कार्य का केंद्रबिन्दु पर्यटकों की तुलना में स्थानीय लोगों पर अधिक दृष्टिगत होने से पक्षपातपूर्ण हो जाता है। पर्यटन मानववैज्ञानिकों ने प्रभावों की जांच करते समय नृवंशविज्ञान के विचरण में मेजबान समुदायों पर पर्यटन के आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में होने वाले परिवर्तनों पर ध्यान केन्द्रित किया।

पर्यटन के प्रभाव

पर्यटन के प्रभावों को समझने के लिए बड़े-बड़े अनुसंधान किए गए हैं। पर्यटन के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन अलग-अलग लोगों द्वारा अलग-अलग तरीके से किया गया।

आर्थिक परिणाम

पर्यटन उद्योग से रोजगार, उद्यमशीलता गतिविधि और संशोधित भूमि उपयोग और आर्थिक संरचना को प्रेरणा मिली। अधिकांश अध्ययनों ने गंतव्य क्षेत्रों विशेष रूप से विकासशील देशों में निम्न आय स्तर, धन और आय का असमान वितरण, बेरोजगारी का उच्च स्तर, कृषि और निर्वाह गतिविधियों पर भारी निर्भरता वाले क्षेत्रों में होने वाले आर्थिक लाभों पर ध्यान दिया है। आर्थिक प्रभाव का मूल्यांकन पर्यटन विकास की नीतियों के निर्माण में सहायक है। पर्यटक स्थल के रूप में कई विकासशील देशों और दूरस्थ स्थलों ने विशेष रूप से रोजगार की पद्धति में आर्थिक बदलाव देखे हैं। श्रम गहन सेवा उद्योग होने के कारण पर्यटन बड़ी संख्या में अर्ध-कुशल और अकुशल श्रमिकों को रोजगार देता है, जो थोड़े से प्रशिक्षण के साथ गाइड, टूर ऑपरेटर, ट्रांसपोर्टर्स आदि के रूप में कार्य कर पाते हैं। किसान और मजदूर भी कई बार शहरी क्षेत्रों में पर्यटन क्षेत्र में अधिक लाभप्रद रोजगार पाने के लिए कृषि कार्यों को छोड़ देते हैं।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

कृषि से पर्यटन में होने वाला संरचनात्मक परिवर्तन भी भूमि उपयोग पद्धति में परिवर्तन लाता है। मानवशास्त्रीय अध्ययन बताते हैं कि दिहाड़ी मजदूरी के अवसरों का सृजन करने के साथ पर्यटन ने कृषि और निर्वाह गतिविधियों को नष्ट कर दिया है। इस सन्दर्भ में मैनस्पर्गर के प्रशांत द्वीपवासियों के अध्ययन, रोसेनबर्ग के फ्रांस में एक छोटे से पहाड़ के गांव के अध्ययन महत्त्वपूर्ण हैं।

पर्यटन के सकारात्मक आर्थिक प्रभावों पर अनुसंधान से नीति निर्माताओं को आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के संदर्भ में व्यापक आशा मिली है। किंतु नीति निर्माताओं ने आर्थिक लाभ के साथ आने वाली आर्थिक लागतों को अनदेखा किया है।

सामाजिक परिणाम

तीन अलग-अलग श्रेणियों में पर्यटन के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों पर शोध किये गए हैं। ये श्रेणियां हैं–

1. पर्यटकों की गतिविधियों, प्रेरणाओं, दृष्टिकोणों और अपेक्षाओं के अनुरूप क्रय निर्णयों की मांग।
2. मेजबान-गंतव्य क्षेत्रों के निवासियों द्वारा सेवाएं प्रदान करने में लगे श्रम और पर्यटक उद्योग के स्थानीय संगठन।
3. मेजबान और अतिथियों के बीच संपर्कों की प्रकृति।

पर्यटन के सामाजिक परिणाम मूल्य प्रणाली व्यक्तिगत व्यवहार, पारिवारिक संरचना और रिश्तों में परिवर्तन, सामूहिक जीवन शैली, नैतिक आचरण, पारंपरिक समारोहों और सामुदायिक संगठनों में योगदान देने वाले तरीकों की गणना करते हैं। मेजबान पर्यटक का संपर्क सतही होता है। उनके बीच संचार/बातचीत में गहराई की कमी होती है। पर्यटक-मेजबान बातचीत सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकती है। ठहरने की अवधि, पर्यटकों का भौतिक अलगाव, भाषा और संचार आदि मेजबान-अतिथि बातचीत को प्रभावित करने वाले कारक हैं।

विविध सांस्कृतिक बातचीत और मेजबान व अतिथियों के बीच होने वाला वाणिज्यिक लेन-देन पर्यटन के मेजबान के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को दिखाता है। पर्यटन व्यवसाय और रोजगार के अधिक अवसर प्रदान के साथ विभिन्न संस्कृतियों या उपसंस्कृतियों से अजनबियों के परस्पर क्रिया की जटिल प्रकृति को भी प्रभावित करता है।

स्मिथ ने सांस्कृतिक मध्यस्थ अथवा सीमांत मानव को बहुभाषी और अभिनव मध्यस्थों के रूप में परिभाषित किया, जो पर्यटकों के उद्देश्यों के लिए स्थानीय संस्कृति को नियंत्रित या परिवर्तित करते हैं। पर्यटन विकास के लिए एक उद्यमी प्रतियोगिता स्थापित करने में उनकी भूमिका अक्सर महत्त्वपूर्ण होती है। नुनेज के अनुसार पर्यटकों के खानपान के उद्देश्यों के लिए दूसरी भाषा के अधिग्रहण से अक्सर लोगों को सेवा पदों के लिए आर्थिक गतिशीलता मिलती है। अधिकांशत: यह देखा जाता है कि पर्यटक मेजबान से कम लेते हैं, जबकि मेजबान पर्यटक से अधिक लेते हैं और इस तरह मेजबान समुदाय में परिवर्तन की एक श्रृंखला बनती है।

भाषा

नुनेज के अनुसार भाषाई अभिरुचि कम साक्षर मेजबान आबादी के बीच भी कई द्विभाषी व्यक्तियों का निर्माण करती है। मैथिसन और वॉल के अनुसार संस्कृति मध्यस्थ अर्थात द्विभाषी मेजबान समाज की संस्कृति की पहचान को प्रभावित किए बिना पर्यटन उद्देश्यों के लिए स्थानीय संस्कृति में हेरफेर कर सकते हैं। भाषा का पर्यटन पर पर्याप्त प्रभाव देखा जाता है। समाज में भाषा की सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका और पर्यटन के साथ इसके संबंधों की जांच करना उचित है। वैग्नर का विचार है कि भाषा अंतर-संचार करने वाली सामाजिक इकाइयों की रचना और वितरण पर निर्णायक प्रभाव डालती है।

व्हाइट ने पर्यटन और सामाजिक परिवर्तन के विकास के बीच संबंधों की जांच करके भाषा को सूचकांक के रूप में उपयोग किया। उन्होंने पर्यटन भाषा परिवर्तन के सन्दर्भ में एक वैचारिक प्रतिमान प्रस्तुत किया, जो तीन तरीकों की पहचान करता है–

1. आर्थिक परिवर्तन के माध्यम से,
2. सामग्री और वित्तीय पृष्ठभूमि के प्रदर्शन प्रभाव के द्वारा,
3. प्रत्यक्ष सामाजिक संपर्क के माध्यम से।

बटलर और व्हाइट ने यह भी पाया कि निजी घरों, फार्महाउस और स्थानीय आवास इकाइयों में रहने वाले पर्यटकों को होटल अथवा मोटल में रहने वाले लोगों की तुलना में अपने मेजबान की भाषाई निष्ठा से कम प्रभाव पड़ता था। दोनों अध्ययन बताते हैं कि मेजबान संस्कृतियों की भाषाई एकजुटता पर्यटन विकास की आत्मसात करने वाली ताकतों से प्रभावित हो सकती है। कोहेन और कूपर के मत में मेजबान भाषा के उपयोग में परिवर्तन पर्यटक मेजबान संबंध की प्रकृति और अंत:क्रियात्मक समूहों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं पर आधारित है।

समकालीन समय में पर्यटन की बदलती प्रकृति के बारे में निष्कर्ष निकालने से पूर्व विभिन्न सांस्कृतिक एवं भाषाई समूहों और विभिन्न भौगोलिक स्थानों के लिए अधिक विस्तृत जांच की आवश्यकता होती है। मुक्त बाजार की अर्थव्यवस्था के कारण पर्यटन उद्योग का विशेष रूप से मेजबान आबादी पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. मानवविज्ञान को परिभाषित करें।

उत्तर–मानवविज्ञान मनुष्य के जीवन का अध्ययन समय और स्थान के पक्षों में करता है। समय मूल रूप से दर्शाता है–वैज्ञानिक समय के पैमाने को, जिसमें मानव की उत्पत्ति, विकास और भिन्नता का अध्ययन सम्मिलित है। स्थान का सम्बन्ध पृथ्वी पर विभिन्न स्थानों में रहने वाली मानव आबादी के पारिस्थितिक और पर्यावरणीय संबंधों से है। मानवविज्ञान में पुरानी संस्कृतियों के साथ-साथ फलने-फूलने वाली संस्कृतियों का अध्ययन भी किया

www.neerajbooks.com